प्रातः क्लास 17-1-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रोज2 समझाते हैं क्योंकि आधा कल्प के बेसमझ हैं ना। तो रोज2 समझाना पड़ता है। पहले2 तो मनुष्य को शान्ति चाहिए। आत्मायें असल में रहने वाली सभी शान्तिधाम के ही हैं। बाप तो है ही सदैव शान्ति का सागर। अभी तुम शान्ति का वरसा प्राप्त कर रहे हो। कहते हैं ना शान्ति देवा.. अभी शान्ति किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते। शान्ति को कहा जाता है मौत। कहते हैं शान्ति देवा... अर्थात हमको इस सृष्टि से अपने घर शान्तिधाम ले चलो। अथवा शांति का वरसा दो। देवताओं के आगे वा शिव बाबा के आगे जाकर यह कहते हैं कि शान्ति दो। क्योंकि शिव बाबा है शान्ति का सागर। अभी तुम शिव बाबा से शान्ति का वरसा ले रहे हो। बाप को याद करते2 तुमको शांतिधाम में जाना है जरूर। न याद करेंगे तो भी जावेंगे जरूर। याद इसलिये करते हो कि पापों का बोझा जो सिर पर है वह खत्म हो जाये। शान्ति और सुख मिलता ही है एक बाप से। क्योंकि वह सुख का और शान्ति का सागर है। दो चीज़ ही मुख्य है। शान्ति को मुक्ति, सुख को जीवनमुक्ति कहा जाता है। फिर जीवनमुक्ति और जीवन बन्ध भी है। अभी तुम जीवन बन्ध से जीवनमुक्त हो रहे हो। सतयुग में कोई बन्धन नहीं होता। गाया भी जाता है सहज मुक्ति -जीवनमुक्ति। वा सद्गति सदगति। अभी दोनों का अर्थ तुम बच्चों ने समझा है। गति कहा जाता है शान्तिधाम को। सदगति कहा जाता है सुखधाम को। सुखधाम और शान्तिधाम। यह है दुःखधाम। तुम यहां बैठे हो। बाप कहते हैं बच्चे शान्तिधाम घर को याद करो। आत्माओं को अपना घर भूला हुआ है। बाप आकर याद दिलाते हैं। समझाते हैं हे रूहानी बच्चों तुम घर जा नहीं सकते हो जब तक मुझे याद न करेंगे। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। आत्मा पवित्र बन अपने घर जावेगी। तुम बच्चे जानते हो यह अपवित्र दुनिया है। एक भी पवित्र मनुष्य नहीं। पवित्र दुनिया को सतयुग, अपवित्र दुनिया को कलियुग कहा जाता है। सतयुग में एक भी अपवित्र हो न सके। नई दुनिया को पवित्र दुनिया, पुरानी दुनिया को अपवित्र दुनिया कहा जाता है। आधा कल्प है पवित्र दुनिया, आधा कल्प है अपवित्र दुनिया। रामराज्य और रावण राज्य। रावणराज्य से अपवित्र दुनिया शुरू होती है। यह भी जरूर होना ही है। यह बना बनाया खेल है ना। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। उनको ही सत्य कहा जाता है। सत्य बातें तुम संगम युग पर ही सुनते हो। जो फिर तुम सतयुग में जाते हो। द्वापर से फिर रावण राज्य शुरू हो जाता है। रावण माना असुर ठहरा ना। असुर कब सत्य बोल न सके। इसलिये कहा जाता है झूठी माया झूठी काया.... आत्मा भी झूठी है तो शरीर भी झूठा है। आत्मा में ही संस्कार भरती है ना। सोना चांदी तांबा लोहा। सोना तो है ही। फिर चांदी पड़ती है। तो चन्द्रवंशी कहा जाता है। पहले है सूर्यवंशी। फिर दो कला कम होती है। अर्थात दो परसेन्ट खाद पड़ती है। चांदी को तो चन्द्रवंशी कहा जाता है। फिर तांबे की लोहे की खाद पड़ती है। द्वापर कलियुग में। फिर चांदी तांबा लोहा आदि सभी निकल जाता है। सच्चा सोना रह जाता है। सच्चे सोने में कोई खाद नहीं होती है। कैसे नहीं कहेंगे कि सोने की खाद पड़ती है। नहीं। सच्चा सोना तो तुम बनते हो इस योगबल से। तुम्हारे में जो चांदी तांबा लोहे की खाद पड़ी है वह निकल जाती है। पहले तो तुम सभी आत्मायें शान्तिधाम में हो। फिर पहले2 आते हो सतयुग में तो उसको कहा जाता है गोल्डेन एज। तुम सच्चा सोना हो। योगबल से सारी खाद निकल कर बाकी सोना बचता है। शान्तिधाम को कोई गोल्डेन एज नहीं कहा जाता। गोल्डेनएजेड भारत को कहा जाता है। जब देवी देवतायें राज्य करते हैं। यहां ही गोल्डेन एज सिलवर एज कापर एज कहा जाता है। शान्तिधाम को कोई गोल्डेन एज नहीं कहेंगे। वहां तो शान्ति ही शान्ति ही है। आत्मा जब शरीर लेती है तो गोल्डेन एज कहा जाता है। फिर सृष्टि ही गोल्डेन एज बन जाती है। सतोप्रधान 5तत्व से शरीर बनता है। आत्मा सतोप्रधान है तो शरीर भी गोल्डेनएजेड सतोप्रधान मिलता है। फिर पिछाड़ी में आकर आयरनएजेड शरीर मिलता है क्योंकि आत्मा में खाद पड़ती है। तो गोल्डेन एज सिलवर एज... इस सृष्टि को कहा जाता है। तो अभी

बच्चों को क्या करना है। पहले2 शान्तिधाम जाना है इसलिये बाप को याद करना है तब ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें टाईम इतना ही लगता है जितना टाईम बाप यहां रहते हैं। ऐसे भी नहीं कहेंगे बाप शान्तिधाम में गोल्डेन एज में हैं। नहीं। वह तो गोल्डेन एज में पार्ट लेते ही नहीं। तो आत्मा को गोल्डेन एजेड नहीं कहेंगे। आत्मा को जब शरीर मिलता है तब कहा जाता है यह गोल्डेनएजेड जीवात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे गोल्डेनएजेड आत्मा। नहीं। गोल्डेनएजेड जीवात्मा फिर सिलवर एजेड जीवात्मा होती है। तो यहां तुम बैठते हो तुमको शान्ति भी सुख भी प्राप्त होती है। तो क्या करना चाहिए। दुःखधाम का सन्यास। इनको कहा जाता है बेहद का सन्यास। उन निवृति मार्ग वाले सन्यासियों का है हद का सन्यास। घर-बार छोड़ जंगल जाते हैं। उनको यह पता नहीं है कि सारी सृष्टि ही जंगल है। यह है कांटों का जंगल। यह कांटों की दुनिया है। वह है फूलों की दुनिया। वह भल सन्यास करते हैं परन्तु फिर भी कांटे के की दुनिया में जंगल में ही शहर से दूर-दूर जाकर रहते हैं। उनकी है ही निवृति मार्ग का धर्म। तुम्हारा है प्रवृति मार्ग। तुम पवित्र जोड़ी थे। अभी अपवित्र बने हो। उनको गृहस्थ आश्रम भी कहते हैं। सन्यासी तो आते ही हैं बाद में। क्रिश्चन कुछ पहले आते हैं। तो यह झाड़ भी याद करना है चक्र भी याद करना है। बाप कल्प2 आकर कल्पवृक्ष की नालेज देते हैं। क्योंकि खुद बीजरूप है। सत है चैतन्य है। इसलिये कल्पवृक्ष का सारा राज समझाते हैं। तुम आत्मा तो हो परन्तु तुमको ज्ञान का सागर सुख का सागर, शान्ति का सागर नहीं कहा जाता। यह महिमा एक बाप की ही है। जो तुमको ऐसा बनाते हैं। बाप की यही महिमा सदैव के लिये है। वह सदैव पवित्र है। और सदैव निराकार ही है। सिर्फ थोड़े समय के लिये आते हैं पावन बनाने। सर्वव्यापी की बात तो है नहीं। तुम जानते हो बाप सदैव वहां रहते हैं। भक्ति मार्ग में सदैव उनको याद करते हैं। सतयुग में तो याद करने की दरकार नहीं रहती। रावण राज्य में तुम्हारा चिल्लाना शुरु होता है। वही बाप आकर सुख शान्ति देते हैं। तो फिर जरूर अशान्ति में उनकी याद आती है। बाप समझाते हैं हर 5000 वर्ष बाद मैं आता हूं। आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुःख। आधा कल्प बाद ही रावण राज्य शुरु होता है। इसमें पहला नम्बर मूल है देह-अभिमान। इसके बाद ही फिर और विकर्म आते हैं। अभी बाप समझाते हैं अपने को आत्मा समझो। देहीअभिमानी बनो। आत्मा की ही पहचान नहीं है। मनुष्य तो सिर्फ कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है। अभी तुम समझते हो वह है अकालमूर्त। इस अकालमूर्त आत्मा का तख्त यह शरीर है। आत्मा बैठती भी भृकुटि में है। अकालमूर्त का यह तख्त है। वह तख्त नहीं जो अमृतसर में लकड़ी का गाया जाता है। वह अकालतख्त तो झूठा है। बाप ने समझाया है जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी अकाल तख्त हैं। अकालमूर्त का यह तख्त है। जो आत्मा आकर यहां विराजमान होती है। सतयुग है या कलियुग है, आत्मा का तख्त है ही यह मनुष्य शरीर। तो कितने अकालतख्त हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं अकाल आत्माओं के तख्त हैं। आत्मा एक तख्त छोड़ झट दूसरा तख्त भरती है। पहले छोटा तख्त होता है फिर बड़ा होता है। यह शरीर रूपी तख्त बड़ा छोटा होता है। वह लकड़ी का तख्त जिसको सिक्ख लोग अकालतख्त कहते वह तो छोटा बड़ा नहीं होता। यह किसको भी पता नहीं है कि सभी मनुष्य मात्र अकाल तख्त हैं आत्मा अकाल है। कब विनाश नहीं होता। आत्मा को तख्त भिन्न2 मिलती है। सतयुग में तुमको बड़ा फर्स्ट क्लास तख्त मिलता है। उनको कहेंगे गोल्डेनएजेड तख्त। तुम रहते ही हो गोल्डेन एज में। फिर उस आत्मा को सिलवर एजेड, कापर एजेड आयरनएजेड तख्त मिलता है। फिर गोल्डेनएजेड तख्त चाहिए। सो तो पवित्र बनना पड़े। इसलिये बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जावेगा। तुमको फिर ऐसा देवर तख्त मिलेगा। अभी तुम प्राकृत के तख्त पर हो। पुरुषोत्तम संगम युगी तख्त है फिर मुझ आत्मा को यह देवताई तख्त मिलेगी। यह बातें दुनिया के मनुष्य नहीं जानते। वह तो है ही जंगली जानवर। कांटों का जंगल है ना। देह-अभिमान में आने से एक दो को दुःख देते हैं। इसलिये इनको दुःखधाम कहा जाता है। अभी बाप बच्चों को समझाते हैं शान्तिधाम को याद करो। जो तुम्हारा असली निवास स्थान है। सुखधाम को याद करो। इनको भूलते जाओ। इन से वैराग्य।

ऐसे भी नहीं सन्यासी मिसल घर-बार छोड़ना है। बाप समझाते हैं वह एक तरफ अच्छा है। दूसरे तरफ बुरा है। तुम्हारा तो अच्छा ही है। उनका हठयोग अच्छा भी है बुरा भी है। क्योंकि देवतायें जब वाममार्ग में जाते हैं तो भारत को थमाने लिये पवित्रता जरूर चाहिए। तो उसमें यह मदद करते हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड है। बाप का भी यहां आना होता है तो यह जहां बेहद का बाप आते हैं वह तो सबसे बड़ा तीर्थ हो गया ना। सर्व की सदगति बाप कर देते हैं। इसलिये भारत ही ऊंच ते ऊंच देश है। उनको कहा जाता है सच्च खण्ड। फिर झूठ खण्ड बनता है। झूठ खण्ड को सच्च खण्ड सच्चा बाप ही ~~xxxx~~ बनाते हैं। यहां तो झूठ ही झूठ है। बड़े ते बड़ा झूठ है बाप को सर्वव्यापी कहना, कुत्ते बिल्ले कण-कण में कहना। कितना छी छी डिफेम करते हैं। कच्छ-अवतार मच्छ अवतार कहना यह ग्लानी करते हैं ना। शंकराचार्य जो सभी का गुरु है वही सबसे जास्ती ग्लानी करते हैं। इसलिये उनको हिरण्यकश्यिप कहा जाता है। जो अपने को ईश्वर कहलाये अपने को पूजा बैठ कराते है। है तो पुजारी ना। पूज्य कोई है नहीं। जब पूज्य देवी देवतायें होते हैं तो पुजारी होते ही नहीं। पुजारी है तो पूज्य नहीं। तो भूल बात बाप समझाते हैं याद की यात्रा। गीता में भी मनमनाभव अक्षर है। बाप कोई संस्कृत नहीं बतलाते हैं। बाप मन्मनाभव का अर्थ बैठ बताते हैं। देह के सभी धर्म छोड़ अपने को आत्मा निश्चयकरो। आत्मा अविनाशी है। वह कब छोटी बड़ी नहीं होती। आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। यह अनादि अविनाशी ड्रामा बना हुआ है। पिछाड़ी में जो आत्मायें आती है उनका बहुत थोड़ा पार्ट है। बाकी टाईम शान्तिधाम में रहते हैं। स्वर्ग में तो आ न सके। पिछाड़ी को आने वाले वहां ही दुःख पाते हैं। जैसे दिवाली पर मच्छर कितने निकलते हैं, सुबह को उठकर देखो तो सभी मरे पड़े होंगे। तो मनुष्यों का भी ऐसे है। पिछाड़ी में आने वालों की क्या वैल्यु रहेगी। जैसे कि जानवर मिसल ठहरे। तो बाप बैठ समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ छोटे से बड़ा, बड़ा से छोटा कैसे होता है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य, कलियुग में कितनी वृद्धि होते झाड़ बड़ा हो जाता है। मुख्य बात बाप ने ईशारा दिया है गृहस्थ व्यवहार में रहते मामेकं याद करो। 8घंटा याद में रहने का अभ्यास करो। याद करते2 आखीरीन पवित्र बन बाप के पास चले जावेंगे तो स्कालरशिप मिलेगी। पाप अगर रह जावेंगे तो फिर जन्म लेना पड़े। सजाएं खाते हैं, फिर पद भी कम हो पड़ता। हिसाब किताब चुकुत तो सभी को करना है। जो भी मनुष्य मात्र हैं। अभी तक भी जन्म लेते रहते हैं। इस समय देखेंगे भारवासियों से क्रिश्चन धर्म ऊंच है। वह फिर भी बहुत सेन्सीबुल हैं। भारतवासी तो 100% सेन्सीबुल थे सो अभी 100% नान-सेन्सीबुल बन गये हैं। क्योंकि यही 100% सुख पाते हैं फिर 100% दुख भी यह पाते हैं। वह तो आदि से पीछे हैं। तो वह इतने बेवकुफ नहीं बनते हैं। क्रिश्चन से ही सभी कुछ सीखने जाते हैं। बाप ने समझाया है क्रिश्चन डिनायस्टी का कृष्ण डिनायस्टी से कनेक्शन है। क्रिश्चनडिनायस्टी ~~xxxx~~ बनेराज्य छीना फिर क्रिश्चन डिनायस्टी से ही राज्य मिलनाहै। इस समय क्रिश्चन डिनायस्टी बड़ी जोर है। उनसे ही भारत को बहुत मदद मिली है। अभी भारत भूख मरता है तो रिटर्न सर्विस हो रही है। यहां से बहुत हीरे जवाहर आदि वहां ले गये हैं। बहुत धनवान बने हैं तो अभी फिरदान पहूंचाते रहते हैं। उनको मिलने का तो है नहीं। तो अभी तुम बच्चों को कोई भी पहचानते नहीं हैं। अगर पहचानते तो आकर राय लें। तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। जो ईश्वर के राय पर चलते हैं वही फिर ईश्वरीय सम्प्रदाय से देवी सम्प्रदाय बनेंगे। इस समय तुम सभी सेऊंच ईश्वरीय सम्प्रदाय हो। फिर देवी सम्प्रदाय बनेंगे। फिर क्षत्री सम्प्रदाय, वैश्यसम्प्रदाय, शुद्र सम्प्रदाय ~~xx~~ बनेंगे। अभी हम सो ब्राह्मण हैं, फिर हम सो देवता क्षत्री ... हम सो ब्र का अर्थ देखो कितना अच्छा है। यह बाजोली का खेल का है जिसको समझना बहुत सहज है। परंतु माया भूलाये देती है। फिर देवीगुणों से आसुरी गुणों में ले जाती हैं। अपवित्र बनना आसुरी गुण है ना। अच्छा बच्चों को गुडमोर्निंग और नमस्ते।

यह तो तुम बच्चे जानते हो कि यह नम्बरवार फूलों की बगीचा है। क्योंकि मुझे बागवान भी कहते हैं। इस बगीचे में किस्म2 के फूल हैं। कोई गुलाब मोतिया है तो कोई अंगूर के फूल भी हैं। तो अपने को हरेक समझ सकते हैं हम कौन से फूल हैं। बाप तो गुलाब और मोतिया जैसे फूलों को देखेंगे उनकी खुशबू लेंगे। अक तरफ तो नजर भी नहीं जावेगी। ~~xxxx~~ ******